4th RIVER FESTIVAL

नदी महोत्सव

RIVER FESTIVAL 2015

RIVER CATCHMENT AREA

CHEMICALS & CRISIS

13-15 FEBRUARY 2015

प्रतीक का अर्थ

चौथे नदी महोत्सव का विषय है **''नदी जलग्रहण क्षेत्र, रसायन और समस्याएँ।''** कार्यक्रम का प्रतीक चिन्ह इसे कला के माध्यम से दर्शाता है। एक पहाड़ का गहरा हरा रंग उत्तम कृषि को दर्शाता है, वहीं दूसरा हल्का हरा रंग रसायन व कीट नाशकों के प्रभाव से कृषि उत्पाद में गिरते 'रस' तत्व की कमी और भूमि में होने वाले भूमि तत्व कि गिरावट को दर्शाता है। पेड़, जंगल का प्रतीक है और उसका अकेला होना छिदरे हुए जंगल की ओर ध्यान आकर्षित करवाता है। झोंपड़ी, किसान का घर है, केकड़ा (कर्क रोग) किसान के घर में प्रवेश कर रही असाध्य बीमारियों का प्रतिनिधि है। नीली रेखा नदी है जिसमें सम्पूर्ण जलग्रहण क्षेत्र का जल आ रहा है, जो रासायनिक प्रयोग के कारण काली (मृत) हो रही है। वह अंततोगत्वा जलग्रहण क्षेत्र के सम्पूर्ण जीव तत्वों को मार रही है। मृत मछली उन सभी का प्रतीक है। संक्षिप्त में यह प्रतीक चिन्ह नदी जलग्रहण क्षेत्र में प्रयोग होने वाले रसायन व कीटनाशकों को दर्शाता है।

चतुर्थ नदी महोत्सव

अवधारणा एवं अपेक्षा- नदी सिर्फ दो किनारों के बीच बहता पानी नहीं, बल्कि अपने संपूर्ण जलग्रहण क्षेत्र के साथ रचा-बसा एक भरा-पूरा संसार है। कोई भी नदी कीट-पतंगों से लेकर मनुष्य तक, घास से लेकर वटवृक्ष तक, सभी को पालती है। सबसे अपेक्षा होती है कि वे उसे सींचें, उसकी सेवा करें।

औद्योगिक क्रांति से विकसित हुई इस नई समाज रचना ने नए-नए प्रतिमान निर्धारित किए। और बेतहाशा, पागलों की तरह उन्हें प्राप्त करने के मंत्र दिए। सामूहिक विकास व सहअस्तित्व के साथ विकास के स्थान पर स्व का विकास जीवन मंत्र बन गया।

कृषि क्षेत्र में यही सोच व संस्कृति रासायनिक कृषि की पोषक बन गई। धरती से ज्यादा से ज्यादा प्राप्त करने का सफर शुरुआत में तो स्वप्न सुंदरी बन कर उतरा। परंतु आधी शताब्दी बीतते-बीतते यह ध्यान आने लगा कि अरे, यह तो असुरा शूर्पनखा है। यह बात ध्यान आते-आते बहुत कुछ खो गया। लेकिन इससे पहले कि सब कुछ खो जाए, हमें दिशा सुधार कर लेने की आवश्यकता है, बल्कि यह अपरिहार्यता हो चली है। यह महोत्सव, उसी मोड़ पर एक चौपाल है जो रोग के परीक्षण से प्रारंभ होकर निदान तक पहुंचने की कोशिश है, और जो पथ्य को चिन्हित करने का भी प्रयास करेगी।

लेकिन यह सब करते हुए भी वह किसी बोझिल मंथन का स्वरूप न ले ले, बल्कि वातावरण आनंद और उत्साह से भरा रहे, यह चौपाल हमेशा उत्सव के रंग में रंगी रहे, इसकी कोशिश हमेशा रहेगी।

दैनिक कार्यक्रम

प्रथम दिवस

- पंजीयन
- उद्घाटन
- विषय प्रवेश
- विषय विस्तार
- नर्मदा संवाद
- नदी संस्कृति

द्वितीय दिवस

रासायनिक कृषि का जल, जंगल, जमीन, जानवर व जन पर प्रभाव

- प्राकृतिक कृषि-सफलता की कहानियां
- प्रतिभागियों के प्रयोग
- नर्मदा संवाद
- सरिता की संस्कृति
- मानव बस्ती व औद्योगिक रसायनों का प्रभाव

तृतीय दिवस

उत्तम कृषि के अनिवार्य अंग

- विचार, विस्तार और संरचना का स्वरूप
- संकलन
- समापन

दैनिक पल प्रतिपल के विस्तृत कार्यक्रम पंजीयन के समय उपलब्ध रहेंगे।

मार्गदर्शक मंडल :

श्री ढेवदत्त माधव धर्माधिकारी (पूर्व न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय)
श्री सीताशरण शर्मा (अध्यक्ष, विधानसभा, म.प्र.)
श्री अमृतलाल वेगड़ (अध्यक्ष, नर्मदा समग्र)

संयोजक :

श्री अनिल माधव ढवे

आयोजन समिति :

श्री राव उदय प्रताप सिंह (सांसद, होशंगाबाद)
श्री पुरुषेंद्र कौरव (अतिरिक्त महाधिवक्ता, म.प्र.)
श्री पोपटराव पवार (हिवरे बाजार, महाराष्ट्र)
श्री सुभाष पालेकर (शून्य बजट कृषि के प्रणेता)
डॉ. अनुपम मिश्र
(क्षेत्रीय समन्वयक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
सुश्री ज्योति बेन पंड्या (शिक्षाविद् एवं नर्मदा सेवी, गुजरात)
श्री अतुल जैन
(सचिव, दीनदयाल शोध संस्थान, दिल्ली)
श्री सी.एम. नारायण शास्त्री (जैविक कृषि विशेषज्ञ, बेंगलुरु)
श्री अखिलेश खंडेलवाल
(अध्यक्ष, नगर पालिका होशंगाबाद)
श्री कृष्णगोपाल व्यास (जल विशेषज्ञ)
श्री सुनील ढेशपांडे (बांस विशेषज्ञ)
श्री राजीव जैन (निदेशक, दूरदर्शन भोपाल)
श्री आशीष गौतम (गंगा समग्र–हरिद्वार)
श्रीमती नीलम सोलंकी (पर्यावरणविद् व लेखक)
श्री श्रीपाल शाह (संस्थापक, असल, अहमदाबाद, गुजरात)
श्री सतीश शर्मा (नांडूवाली नदी, राजस्थान)
श्री चतर सिंह (पारंपरिक जल स्त्रोत विशेषज्ञ, जैसलमेर)

निकट के दर्शनीय स्थल

- पचमढ़ी 140 कि.मी.
- भेड़ाघाट 260 कि.मी.
- उज्जैन 280 कि.मी.
- ओमकारेश्वर 280 कि.मी.
- खजुराहो 455 कि.मी.

नर्मदा समग्र

एक परिचय

नर्मदा समग्र एक प्रयत्न है। एक नदी, एक जल स्त्रोत, एक आस्था को स्वस्थ, सुंदर और पवित्र बनाये रखने का यह एक प्रयास है। विश्व की अधिकांश संस्कृतियों का जन्म व विकास नदियों के किनारे हुआ है। भारत के ऋषियों ने पर्यावरण संतुलन के सूत्रों को ध्यान में रखकर समाज की नदियों, पहाड़ों, जंगलों व पशु-पक्षियों सहित पूरे संसार की ओर देखने की विशेष सह-अस्तित्व की अवधारणा का विकास किया। उन्होंने पाषाण में भी जीवन देखने का मंत्र दिया। ऐसे प्रयत्नों के कारण भारत में प्रकृति को समझने व उससे व्यवहार की परिपक्व भावों से युक्त परम्पराओं का विकास हुआ। जियो और जीने दो जैसी मान्यताएँ विकसित हुई। पेड़-पौधे, पशु, पानी सभी पूज्य हो गए। समय के साथ चलते-चलते जब परम्पराएँ बगैर समझे निभाई जाने लगीं तो वे रूढ़ियाँ बन गई। आँखें तो रही लेकिन दृष्टि बदल गई। इसने सह-अस्तित्व के सिद्धांत को बदलकर, 'न जियेंगे, न जीने देंगे' जैसी विकृत सोच का विकास किया। इसी का परिणाम रहा कि नदी व पहाड़, पशु व पेड़ सब मरने लगे। नर्मदा जैसी प्राचीन नदी भी इस व्यवहार से नहीं बच पा रही है। उसका अस्तित्व संकट में है। जंगल कट रहे हैं, नदी का जल कम हो रहा है और प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है। माँ नर्मदा से सभी को पानी चाहिए, किन्तु नर्मदा में पानी कहाँ से आता है, वह कैसे बढ़ाया जाए, इस विचार का सर्वत्र अभाव है।

नर्मदा समग्र एक पहल है। पहले से कार्य कर रहे व आगे कार्य करने वालों के बीच संवाद की यह कोशिश है। नर्मदा समग्र इस पुण्य सलिला के सभी पक्षों पर संयुक्त प्रयास चाहता है। हमारी नदियों के सारे आयामों को एक स्थान पर समेटने की ओर आगे बढ़ना चाहता है। नदी महोत्सव इसी क्रम में एक कड़ी है।

आप सभी से प्रार्थना है कि सपरिवार, सकुटुम्ब इस कार्य में अपनी भागीदारी निश्चित करें, जिससे इस प्रयत्न को सहयोग मिले व मेकलसुता की सेवा भी हो सके।

अमृतलाल वेगड़
अध्यक्ष, नर्मदा समग्र न्यास

अनिल माधव दवे
सचिव, नर्मदा समग्र न्यास

बान्द्राभान कैसे पहुँचे

- नजदीकी एयरपोर्ट भोपाल - 90 कि.मी.,
- नजदीकी रेलवे जंक्शन ईटारसी - 30 कि.मी.
- नजदीकी रेलवे स्टेशन होशंगाबाद (मुम्बई-दिल्ली रेलवे लाईन) - 10 कि.मी.

पंजीयन एवं अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें

आयोजन समिति - नम '15

नर्मदा समग्र ''नदी का घर''
सीनियर एमआईजी-2, अंकुर कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016, मध्यप्रदेश, भारत
फोन : +91 755 2460754
ईमेल : narmadasamagra@gmail.com,
www.narmadasamagra.org

बान्द्राभान पहुँचने के लिए अपने एंड्रॉईड मोबाइल से यह QR CODE स्कैन करें

भौगोलिक निर्देशांक : 22°47'46'', 71°47'9''

Rang Creation # 98260 29472